सरकारी दफ्तरों में बढ़ा भ्रष्टाचार

- आय से अधिक संपत्ति और पद के दुरुपयोग के मामले गिनती के
- सरकारी कुर्सी पर भ्रष्टाचार का दाग, 44 में 40 मामले रिश्वतखोरी के

91 प्रतिशत मामले रिश्वत-खोरी के

44 प्रकरण दर्ज हुए 6 अक्टूबर तक

30 दफ्तरों में लगाए शिकायत बोर्ड

नव भारत न्यूज

इंदौर. सरकारी दफ्तरों में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई के बीच लोकायुक्त के इस साल के आंकड़े एक अलग तस्वीर सामने रख रहे हैं. 6 अक्टूबर 2026 तक दर्ज 44 प्रकरणों में 40 रिश्वत लेते पकड़ने के हैं, जबकि पद के दुरुपयोग का एक और आय से अधिक संपत्ति के तीन मामले दर्ज हुए हैं. यानी लोकायुक्त के पास पहुंचे भ्रष्टाचार के मामलों में रिश्वतखोरी सबसे बड़ा हिस्सा है. सरकारी कामकाज में रिश्वत मांगने की नौबत बार-बार क्यों आ रही है और भ्रष्टाचार के दूसरे रूपों की शिकायतें अपेक्षाकृत कम क्यों दर्ज हो रही हैं?

लोकायुक्त की अधिकृत जानकारी के अनुसार इस साल 44 प्रकरणों में करीब 91 प्रतिशत मामले रिश्वतखोरी से जुड़े हैं. वहीं, आय से अधिक संपत्ति के तीन मामलों में पांच अधिकारियों के ठिकानों पर छापे की कार्रवाई हुई, जिसमें करोड़ों की संपत्ति का खुलासा हुआ. यह आंकड़े बताते हैं कि रिश्वत लेते पकड़ने की कार्रवाई के मुकाबले आय से अधिक संपत्ति और पद के दुरुपयोग के मामले काफी कम दर्ज हुए हैं. हालांकि, इनकी संख्या कम होने का अर्थ यह नहीं है कि भ्रष्टाचार के ऐसे मामले मौजूद नहीं हैं. इनके सामने आने के लिए शिकायत, जांच और पुख्ता साक्ष्य की जरूरत होती है. लोकायुक्त के सामने एक दूसरी चुनौती यह भी है कि कई बार लोग रिश्वत मांगने की शिकायत करना चाहते हैं, लेकिन उन्हें यह पता नहीं होता कि शिकायत कहां और किस नंबर पर करें. इसी वजह से लोकायुक्त ने आठ जिलों के करीब 30 सरकारी कार्यालयों में संपर्क नंबर वाले बोर्ड लगाए हैं. आलीराजपुर, झाबुआ, खरगोन, खंडवा और धार सहित आठ जिलों के यांत्रिकी विभाग, जिला पंचायत, नगर परिषद, जनपद पंचायत, एसडीएम और तहसील कार्यालयों में ये बोर्ड लगाए हैं. इन पर दर्ज नंबरों के जरिए आम लोग रिश्वत मांगने वाले अधिकारी कर्मचारी की सूचना सीधे लोकायुक्त को दे सकेंगे.



सरकारी कार्यालयों में लगाए बोर्ड: डीएसपी आनंद चौहान ने बताया कि आम लोगों तक लोकायुक्त का संपर्क नंबर पहुंचाने के लिए आठ जिलों के सरकारी कार्यालयों में बोर्ड लगाए हैं. किसी भी सरकारी अधिकारी या कर्मचारी द्वारा रिश्वत मांगने पर लोग इन पर दर्ज नंबर के माध्यम से सूचना दे सकते हैं.

आम लोगों तक जानकारी पहुंचाना उद्देश्य

लोकायुक्त की यह पहल इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि सरकारी दफ्तरों में काम कराने के दौरान रिश्वत मांगने की शिकायत करने वाले कई लोग कार्रवाई की प्रक्रिया और संपर्क के माध्यम से अनजान रहते हैं. बोर्ड लगाने का उद्देश्य शिकायत करने की जानकारी आम लोगों तक पहुंचाना है, ताकि रिश्वत मांगने वालों के खिलाफ समय रहते कार्रवाई की जा सके. लोकायुक्त एसपी डॉ. राजेश सहाय के निर्देशन में भ्रष्टाचार के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है.

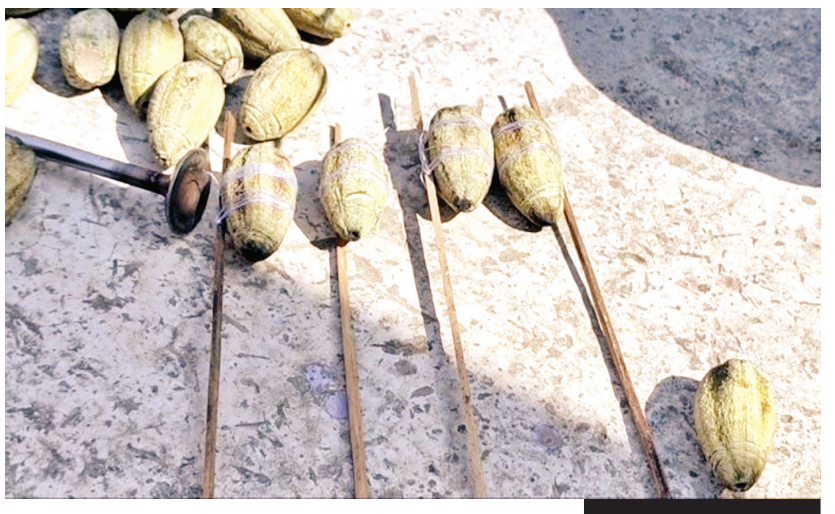
गौतमपुरा में कल फिर सजेगा हिंगोट का रणक्षेत्र

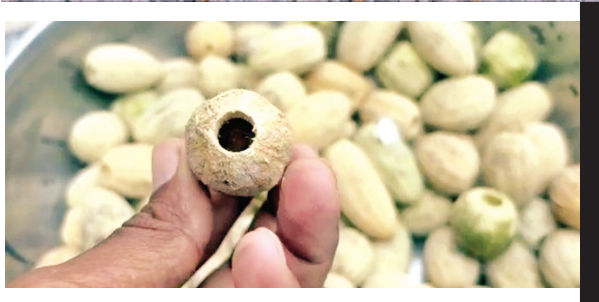
शैलेन्द्र कश्यप

इंदौर. इंदौर जिले के गौतमपुरा में दीपावली के दूसरे दिन पड़वा पर होने वाला हिंगोट युद्ध अपने आप में बेहद अनोखा और रोमांचकारी है. यहां न तलवारें चलती हैं और न बंदूकें गरजती हैं, बल्कि बारूद से भरे हिंगोट एक-दूसरे पर बरसाए जाते हैं. आग के गोलों की रोशनी, बारूद की गूंज और योद्धाओं के जोश के बीच होने वाला यह युद्ध सदियों पुरानी परंपरा का प्रतीक है. इसकी सबसे खास बात यह है कि इस युद्ध में न कोई विजेता होता है और न कोई पराजित. यहां मुकाबला दुश्मनी का नहीं, बल्कि परंपरा और आपसी भाईचारे का होता है.

हिंगोट युद्ध की तैयारियां मैदान में पहुंचने से काफी पहले ही शुरू हो जाती हैं। इस अनोखे युद्ध में शामिल होने वाले योद्धा करीब 15 दिन से एक माह पहले से ही तैयारी में जुट जाते हैं. जंगलों में जाकर हिंगोनिया नामक पेड़ के फल एकत्रित किए जाते हैं. इसके बाद फलों का गूदा निकालकर उन्हें सुखाया जाता है. सूखने के बाद इन फलों में बारूद भरा जाता है और उनके मुंह को पीली मिट्टी से बंद किया जाता है. फिर बांस की खपच्ची लगाकर इन्हें युद्ध में इस्तेमाल के लिए तैयार किया जाता है. इसी तरह तैयार होता है वह हिंगोट, जो पड़वा के दिन गौतमपुरा की रणभूमि में आग का गोला बनकर बरसता है. यह परंपरा कितने वर्षों पुरानी है, इसकी सटीक जानकारी किसी के पास नहीं है. क्षेत्र के बुजुर्ग बताते हैं कि उन्होंने अपने पिता और दादा के समय से इस युद्ध को होते देखा है. पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही यह परंपरा आज भी आधुनिक दौर में उसी उत्साह के साथ निभाई जा रही है.

तुर्रा और कलंगी के बीच होता है मुकाबला: हिंगोट युद्ध में दो योद्धा दल हिस्सा लेते हैं. एक दल को तुर्रा और दूसरे को कलंगी कहा जाता है. युद्ध के दिन दोनों दलों के योद्धा सिर पर पगड़ी, साफा या हेलमेट पहनकर मैदान में उतरने की तैयारी करते हैं. घर की महिलाएं और बेटियां तिलक लगाकर उन्हें युद्धभूमि के लिए रवाना करती हैं. मैदान में पहुंचने से पहले दोनों दलों के योद्धा भगवान देवनारायण के मंदिर में पहुंचकर आशीर्वाद लेते हैं. यहां वरिष्ठों के आदेश के साथ ही हिंगोट युद्ध का आगाज होता है.







- दीपावली के दूसरे दिन होगा अनोखा युद्ध
- मैदान में उतरेंगे तुर्रा और कलंगी के योद्धा
- सदियों पुरानी परंपरा को निभाने के लिए गांव में तैयारियां तेज
- प्रशासन ने भी सुरक्षा का कड़ा पहरा लगाया

न दुश्मनी, न कोई बैर... फिर भी बरसते हैं आग के गोले

इस युद्ध की सबसे दिलचस्प बात यह है कि इसमें शामिल होने वाले योद्धाओं के बीच कोई व्यक्तिगत दुश्मनी या रंजिश नहीं होती. दोनों दलों के लोग वर्षों से इस परंपरा को निभाते आ रहे हैं. यहां न कोई आयोजक होता है और न कोई प्रायोजक, फिर भी परंपरा के प्रति लोगों का जुनून इसे आज तक जीवित रखे हुए है. हालांकि यह रोमांच जितना आकर्षक है, उतना ही जोखिम भरा भी है. हिंगोट की चपेट में आने से कई बार योद्धा ही नहीं, बल्कि दर्शक भी घायल हो जाते हैं. यही वजह है कि युद्ध के दौरान सुरक्षा इंतजामों का विशेष ध्यान रखा जाता है.

प्रशासन ने भी कसी कमर

हिंगोट युद्ध को लेकर अब प्रशासनिक तैयारियां भी तेज हो गई हैं. युद्ध मैदान का वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा निरीक्षण किया जा चुका है. मैदान में बड़ी संख्या में बैरिकेडिंग की जा रही है. दर्शकों और अन्य लोगों की सुरक्षा के लिए बड़ी-बड़ी सुरक्षा जालियां लगाई जा रही हैं. चप्पे-चप्पे पर नजर रखने के लिए सीसीटीवी कैमरों की व्यवस्था भी की जा रही है. स्वास्थ्य विभाग का अमला और पर्याप्त एंबुलेंस भी तैनात रहेंगी, ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराई जा सके.

योद्धाओं का जुनून बरकरार



हिंगोट युद्ध में हिस्सा लेने वाले योद्धा लखन बताते हैं कि इस परंपरा में शामिल होने के लिए करीब 15 दिन पहले से तैयारियां शुरू करनी पड़ती हैं. जंगल से हिंगोनिया के फल लाने से लेकर उनकी सफाई, सुखाने और अन्य तैयारियों में काफी मेहनत लगती है. इसके बाद योद्धा परंपरागत वेशभूषा में सिर पर साफा या हेलमेट पहनकर युद्ध मैदान में उतरते हैं. लखन के मुताबिक, कुछ देर के इस अनोखे युद्ध के पीछे कई दिनों की मेहनत और वर्षों पुरानी परंपरा छिपी हुई है. योद्धाओं के बीच कोई दुश्मनी नहीं होती, लेकिन अपनी परंपरा को निभाने का जोश उन्हें हर साल मैदान में खींच लाता है.

एसडीएम बोले- सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम



क्षेत्रीय एसडीएम चरणजीत सिंह हुड्डा ने बताया कि हिंगोट युद्ध के आयोजन को लेकर पांच दिन पहले बैठक आयोजित कर तैयारियों की समीक्षा की गई है. सुरक्षा के चाक-चौबंद इंतजाम किए जा रहे हैं. युद्ध मैदान में सुरक्षा जालियां लगाई जा रही हैं, वहीं आयोजन के दौरान पर्याप्त एंबुलेंस भी उपलब्ध रहेंगी, ताकि किसी भी आपात स्थिति में तत्काल मदद पहुंचाई जा सके.

ब्राउन शुगर की तस्करी करते हुए 'संजय दत्त' गिरफ्तार



इंदौर. क्राइम ब्रांच इंदौर ने एक ऐसे अपराधी को गिरफ्तार किया है, जिसका असली नाम तो विशाल बुंदेला है, लेकिन उसने संजय दत्त के नाम से अपनी पहचान बना रखी थी. उस पर मारपीट,अड़ीबाजी और लूट के कई मामले दर्ज हैं. पुलिस ने उसे पूर्व में पकड़े गए तस्कर से पूछताछ के बाद गिरफ्तार किया है. क्राइम ब्रांच ने 4 नवंबर को राजकुमार सब्जी मंडी स्थित हनुमान मंदिर के पास से मनोज उर्फ मन्नू वर्मा को 15 ग्राम ब्राउन शुगर के साथ पकड़ा था. उससे पूछताछ और बैकवर्ड लिंकेज की जांच में निरंजनपुर नई बस्ती निवासी विशाल बुंदेला उर्फ संजय दत्त उम्र 21 साल की भूमिका सामने आई, घटना के बाद से वह फरार था. तकनीकी साक्ष्यों और मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया. डीसीपी क्राइम राजेश त्रिपाठी ने बताया कि जब्त की गई ब्राउन शुगर की कीमत करीब 1.50 लाख रुपए थी. आरोपी नौवीं तक पढ़ा है और विजयनगर स्थित विंध्येश्वरी ट्रैवल्स में काम करता है. उसके खिलाफ लसूड़िया और परदेशीपुरा थानों में मारपीट, अड़ीबाजी और लूट के मामले पहले से दर्ज हैं.

दिलजीत दोसांझ के शो को लेकर नोटिस

चार गाने नहीं गाने पर होगा प्रतिबंध

नव भारत न्यूज

इंदौर. शहर में 15 नवंबर को दिलजीत दोसांझ के कार्यक्रम को लेकर महिला एवं बाल विकास विभाग ने नोटिस जारी किया है. नोटिस में नशा, शराब और हथियार से जुड़े गाने नहीं गाने का प्रतिबंध लगाने के निर्देश दिए हैं. उक्त नोटिस पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के आदेश के पालन में जारी किया गया है.

प्रसिद्ध पंजाबी पॉप गायक दिलजीत दोसांझ के शो को लेकर स्थानीय महिला एवं बाल विकास अधिकारी ने सी-21 मॉल के मैनेजर को नोटिस दिया है. नोटिस में हाईकोर्ट के आदेश के तहत नशा, शराब और हथियार से संबंधित बोल वाले गाने नहीं गाने का प्रतिबंध लगाया है. उक्त नोटिस का कानूनी आधार है, जिसमें पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय का 22 जुलाई 2019 जारी आदेश है. हाईकोर्ट ने आदेश में नशा और हथियारों को बढ़ावा देने वाले गानों पर रोक लगाने के निर्देश दिए गए थे. महिला एवं बाल विकास विभाग ने इस आदेश को ध्यान में रखकर सी-21 मॉल के आयोजन प्रबंधकों को



निर्देश भेजे. इस निर्देश की एक प्रति इंदौर कलेक्टर और स्थानीय पुलिस को भी भेजी गई है. नोटिस में जिन चार गानों को प्रतिबंधित किया गया है, वे हैं: 'पटियाला पैग', '5 तारा ठेके', 'केस/ जेब विचों अफीम लभिया' और 'जट्ट फायर करदा'. ये गाने शराब, नशा और गन कल्चर को बढ़ावा देने वाले माने गए हैं.

दिलजीत दोसांझ का ऑरा इंडिया टूर और इंदौर कॉन्सर्ट

इंदौर में होने वाला दिलजीत दोसांझ का कार्यक्रम 'ऑरा इंडिया टूर 2026' का हिस्सा है. उक्त टूर देश के विभिन्न शहरों में आयोजित हो रहा है. 15 नवंबर को सी-21 मॉल में यह शो उनके फैंस के लिए खास माना जा रहा था. हालांकि, रोक के बावजूद उनके कुछ लोकप्रिय गाने अब इस कॉन्सर्ट में नहीं गाए जाएंगे. इससे कॉन्सर्ट में बदलाव की संभावना है.

शिकायतकर्ता की मांगें और तर्क

शिकायतकर्ता चंडीगढ़ के प्रोफेसर डॉ. पंडितराव धरेनवर ने 1 नवंबर को शिकायत दर्ज कराई थी. उन्होंने गानों के बोल बदलकर गाने की अनुमति भी न देने की मांग की है. इसके अतिरिक्त, बच्चों को मंच पर बुलाने और नकली बुलेट बेल्ट पहनने पर भी रोक लगाने की अपील की गई है. शिकायतकर्ता ने तेज आवाज और चमकती लाइटों से बच्चों को होने वाले नुकसान पर भी चिंता जताई है. उन्होंने कहा है कि तेज आवाज बच्चों की सुनने की क्षमता को प्रभावित कर सकती है. उनका तर्क है कि उक्त व्यवस्था हिंसक संस्कृति को बढ़ावा देती है, यह बच्चों के लिए घातक है.

अच्छी पहल | बाल संरक्षण आश्रम में बांटी खुशियां

कलेक्टर ने बच्चों के साथ मनाई दीपावली

नव भारत न्यूज

इंदौर. शनिवार को शहर के शासकीय बाल संरक्षण आश्रम में बच्चों के साथ कलेक्टर ने दीपावली पर्व मनाया. इस दौरान कलेक्टर ने बच्चों को नए कपड़े, मिठाई, पटाखे देकर खुशियां बांटी. कलेक्टर ने बच्चों से उनके स्वास्थ, भोजन और पढ़ाई को लेकर बातचीत की.

कलेक्टर शिवम वर्मा ने शासकीय बाल संरक्षण आश्रम में निवासरत बच्चों के साथ दीपावली का पर्व मनाया. कलेक्टर ने बच्चों को दीपावली की खुशियों में सहभागी बनाते हुए उपहार, नए वस्त्र एवं मिठाइयां वितरित कीं. कलेक्टर ने



बच्चों के साथ आत्मीय संवाद कर उनका हालचाल जाना और समय बिताया। कलेक्टर ने बच्चों को मिठाइयां बांटी तथा आतिशबाजी भी की. इस अवसर पर कलेक्टर ने कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं. इन बच्चों को खुश देखकर मन में प्रसन्नता होती है और विश्वास मजबूत होता है कि देश का भविष्य उज्ज्वल है. उन्होंने कहा कि बच्चों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ-साथ भारतीय त्योहारों, परंपराओं और संस्कृति से परिचित कराना भी जरूरी है. इसी उद्देश्य से आश्रम में सभी त्योहार पूरे उत्साह और परंपरागत तरीके से मनाए जाते हैं. बच्चों का उत्साह और मुस्कान हमेशा आयोजन खास बना देते है. इस दौरान जिला पंचायत सीईओ हिमांशु प्रजापति तथा अपर कलेक्टर रिंकेश वैश्य सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद थे.

